(Approved Research Topic "माध्यमिक विद्यायालयों में कार्यरत शिक्षकों की निष्प्रभता एवं उससे सम्बन्धित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN EDUCATION

To

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

Anjana Yadav

Enrollment no. 2200902

Under the supervision of

Prof./Dr. P.K. Pandey

Faculty of Education

School Of Education

U.P. Rajarshi Tandon Open University

Shantipuram, (Sector-F) Phaphamau, Prayagraj- 211021

School of Education

Certificate

I hereby declare that the short synopsis " -Research Topic "माध्यमिक विद्यायालयों में कार्यरत शिक्षकों की निष्प्रभता एवं उससे सम्बन्धित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन" being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Education under school of Education of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year-2022-23.
It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. / Dr. P.K. Pandey and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

(Signature)
Anjana Yadav
2200902

Research Supervisor & Co-Supervisor (If any)

27/05/25

(Signature)
Prof. P.K. Pandey
Faculty of Education

(Signature)
Prof.
26.05.2025
P.K.Astaline
(Director of Concerned School of Studies)

(Signature)
(Name) 27/05/25
(Secretary of RDC/ Director, R&D Cell)

ABSTRACT

प्रस्तुत अध्ययन शिक्षकों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले व्यवहारात्मक निष्प्रभता (Burnout) तथा उससे संबंधित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन है। यह शोध इस तथ्य की पड़ताल करने का प्रयास करेगा कि अनुदेशन की नवीनतम तकनीकों के प्रसार के बावजूद कक्षा शिक्षण का स्तर क्यों घट रहा है, और शिक्षकों में अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठा में कमी के क्या कारण हैं।

यह शोध अध्ययन माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की निष्प्रभता (अर्थात कार्य के प्रति रुचि की कमी, कार्यक्षमता में गिरावट एवं पेशेवर उत्साह का अभाव) एवं उससे संबंधित विभिन्न कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास करता है। आज के बदलते शैक्षिक परिवेश में शिक्षक केवल ज्ञान के संप्रेषक नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के मार्गदर्शक भी हैं। ऐसे में शिक्षकों की निष्प्रभता न केवल उनकी व्यक्तिगत दक्षता को प्रभावित करती है, बल्कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों और संपूर्ण विद्यालयी वातावरण पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

इस अध्ययन में निष्प्रभता के प्रमुख कारकों जैसे कार्य का बोझ, प्रशासनिक दबाव, अनुचित वेतनमान, सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ, विद्यार्थियों का अनुशासनहीन व्यवहार, तथा शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य आदि का विश्लेषण किया गया है। इसके अतिरिक्त अध्ययन में शिक्षकों के अनुभव, आयु, प्रशिक्षण स्तर और पारिवारिक पृष्ठभूमि जैसे व्यक्तिगत पहलुओं को भी ध्यान में रखा गया है। शोध का मुख्य उद्देश्य उत्तर प्रदेश के कानपुर नगर स्थित माध्यमिक शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की निष्प्रभता की स्थिति एवं स्तर का अध्ययन करना है। यह अध्ययन केवल उन्हीं विद्यालयों तक सीमित रहेगा जो माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध हैं। आवश्यक आंकड़ों के संग्रह हेतु मानकीकृत परीक्षणों (Standardized Tests) का

उपयोग किया जाएगा। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण उनके स्वरूप के अनुसार टी-परीक्षण (t-test), प्रसरण विश्लेषण (ANOVA) आदि उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों से किया जाएगा।

अध्ययन के निष्कर्ष यह संकेत करते हैं कि अधिकांश शिक्षक कार्यस्थल पर पर्याप्त प्रेरणा की कमी, संसाधनों की अनुपलब्धता तथा उचित सम्मान के अभाव के कारण मानसिक रूप से थकान का अनुभव करते हैं, जिससे उनकी कार्यक्षमता प्रभावित होती है।

अंततः, इस शोध में कुछ सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं, जैसे–शिक्षकों के लिए नियमित प्रेरणात्मक कार्यक्रम, कार्य का यथोचित विभाजन, मानसिक स्वास्थ्य सहयोग, तथा विद्यालयी प्रशासन में शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी इत्यादि, जिससे शिक्षकों की निष्प्रभता को कम किया जा सके और एक प्रभावी शिक्षण वातावरण सुनिश्चित किया जा सके।

Keywords:

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक
शिक्षकों की निष्प्रभता
शिक्षकों की निष्प्रभता से सम्बन्धित कारक

CONTENTS		
S. NO.	Description	Page no.
1	Introduction	1-2
2	Literature Review	3-10
3	Description Broad Area	11-14
4	Objectives of the Study	15-18
5	Research Methodology	19-20
6	Expected Outcomes of the Research	21-23
7	References	24-25

Plagiarism Report

Introduction-(प्रस्तावना)

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास करके उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है तथा उसे सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र रूपी भवन की आधारशिला होती है प्रगतिशील राष्ट्र की रीढ़ है और यह कार्य शिक्षक द्वारा सम्पन्न किया जाता है। आज के बालक कल के राष्ट्र निर्माता है। देश के इन भावी कर्णधारों के निर्माण का दायित्व हमारे अध्यापको पर हैं।

प्रचीन काल से ही हमारे देश में अध्यापकों को साक्षात ब्रह्म स्वीकार किया गया है। समाज में गुरु का स्थान सर्वोच्य था। स्वंय केसरिया वस्त्र धारण करने वाले स्वस्थ शरीर एवं सादा जीवन उच्च विचार के सूत्र के संग्रहालय राष्ट्र के गौरव थे।

शिक्षण के कार्य में शिक्षक का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।यदि शिक्षक शरीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं होगा तो शिक्षण स्वयमेव नकारात्मक रूप से प्रभावित होगा अतः उत्तम शिक्षण ही आवश्यक माँग है शिक्षक का दोनों प्रकार का अर्थात् शरीरिक और मानसिक स्वास्थ्य उत्तम होना चाहिए।

शिक्षकों में प्राय: दिखाई देता है कि शिक्षकों के कार्यों एवं दायित्वों में बढ़ोतरी तथा दबाव के फलस्वरुप उनमें नकारात्मक अनुभवों की बढ़ोत्तरी हो रही है। इन नकारात्मक अनुभवों की पहचान शिक्षक निष्प्रभता के रूप में की जाती है। शिक्षकों में निष्प्रभता बढ़ने सम्बन्धी

समस्या एक विषम समस्या है, जो शिक्षक के शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित करता है।

सामान्य रूप से निष्प्रभता एक व्यवहार है, जो कई कारणों से उत्पन्न नकारात्मक अनुभवों तथा भौतिक सांवेगिक और प्रवृत्तिजन्य थकान आदि के फलस्वरूप प्रकट होता है।

वस्तुतः यह व्यवहार एक प्रकार का आक्रोशित व्यवहार होता है, किन्तु निष्प्रभता की तीव्रता पर निर्भर करता है कि व्यक्ति निष्प्रभता के किस स्तर पर जब कोई व्यक्ति थकान, हताशा, निराशा, के कारण, अपने पेशागत प्रतिदिन के उत्तरदायित्वों के निर्वाहन में असफल होता है, चाहे वह इन स्थितियों के आने के कारण हो अथवा इनके बने रहने के कारण हो तो वह एक असफल तथा अप्रभावी पेशवर होता है। यह असफलता अथवा अप्रभाविता उसके निष्प्रंभता के कारण होता है।

निष्प्रभता (Burnout) पद का प्रथम परिचय देने का श्रेय इसका प्रथम प्रयोग किया। 1974 में फूडेनबर्जर (Rreudenberyge) ग्रीक द्वारा 1961 में लिखे एक उपन्यास Burn-Out Case को है जिसमें एक निवेश तथा असम्बद्ध आर्किटेबल को विषय बनाया गया था। प्रायोगिक तौर पर व्यासायिक क्षेत्रों में इसका शब्दकोश अर्थ है 'असफल होना' 'उपयुक्त ऊर्जा शक्ति अंथवा संसाधन प्रदर्शित न कर पाना।

—

Survey of related literature- (संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण)

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन शोधार्थिनी को नवीनतम ज्ञान के शिखर पर ले जाती है। जहाँ उसे अपने क्षेत्र से सम्बन्धित तथ्यों, ऑकड़ो एवं परिणामों का मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है तथा यह ज्ञात होता है कि ज्ञान के क्षेत्र से कहा रिक्तियाँ है, कहाँ निष्कर्ष विरोध है तथा कहाँ पुनः अनुसन्धान की आवश्यकता है जब वह दूसरे शोधकर्ताओं के शोध कार्यो की जांच एवं मूल्यांकन करता है तो उसे बहुत सी अनुसन्धान विधियाँ, बहुत से तथ्यों बहुत से सिद्धान्तों संकल्पनाओं एवं सन्दर्भ ग्रन्थों का ज्ञान होता है। सर्वे प्रतिवेदनों की कमियों एवं अच्छाइयों को जाँच लेने के बाद इस बात की तनिक भी सम्भावना नहीं रह जाती है कि वह अपने अनुसंधान प्रक्रिया में उन गलतियों की पुनरावृत्ति नही करेगी, जो उसके पूर्व शोधकर्ता कर चुके है।

अपने शोध क्षेत्र का अध्ययन करने एवं शोध प्रस्ताव हेतु शोध से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन में जिन स्त्रोतों से सहायता ली गयी है उन्हें मुख्य दो रूपों में बाँटा गया है

भारत में हुए शोध एवं साहित्य का सर्वेक्षण-

भारतीय परिवेश में भी शिक्षक निष्प्रभता पर विगत वर्षो में अध्ययनों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि देखी जा रही है। जिनमें कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की डॉ० रेनू चौधरी (2001) का "Teacher Burnout in Relation to occupational stress mental health problems and socio-economic status a factor analytical study"

लखनऊ विश्वविद्यालय की डॉ० तृप्ता त्रिवेदी (2005) का "(A study of Personality and professional attitude of burnout teacher)" डॉ० तनुजा सुरपुरिया और मार्क जार्डन का MBI आधारित 'Spirit test' फार्बर और आशार का शिक्षक निष्प्रभता सम्बन्धी अध्ययन डॉ० अनिल शुक्ला तथा डॉ० तृप्ता त्रिवेदी लखनऊ विश्वविद्यालय (2008) का 'Burnout in indian teachers' तथा फारूक ट्रेनिंग कॉलेज कालीकट केरल के डॉ० नौशाद (2008) का 'From teacher burnout to student burnout'

ऐशिया पैसिफिक एजुकेशन रिव्यू (Vol. 93) के अनुसार निष्प्रभता के सम्प्रत्यय का जन्म 1970 के दशक के मध्य में संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ और आश्र्वजनक तीव्रता से इस संसार के अनगिनत प्रकार के सामाजिक और व्यक्तिगत ऐसे समस्याओं को प्रभावित किया जो कार्यकारी लोगों से सम्बन्धित थे।

इसका उल्लेख सहायक पेशेवरों के मध्य विशिष्ट अकार्यता के रूप में किया जाता है जो इस बात में विश्वास करते हैं कि परिणाम की माँग उसकी ऊर्जा क्षमता और प्राप्त संसाधन की उपेक्षा ज्यादा है। यद्यपि इसकी स्पष्ट सहमति प्राप्त परिभाषा अभी अस्तित्व में नहीं हैं निष्प्रभता की पहचान अपने कार्य के प्रति पर्याप्त सकेन्द्रण अथवा उसमें पूर्ण निर्लप्तता के अभाव के रूप में की जाती है।

एक निष्प्रभता, सांवेगिक थकान उदासीनता, शारीरिक थकावट, ऊर्जा की कमी, काल्पनिक अस्वस्थता नशे की लत, दोष-दर्शिता अनावश्यक, क्रोध, अवसाद और व्यक्तिगत उपलब्धियों की कमी में परिवर्तित हो जाता है। यह पाया गया है कि शिक्षक भी निष्प्रभता के इन लक्षणों को प्रकट करते हैं जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनके शिक्षण कौशल को प्रभावित करता है।

बहुत से शिक्षक यह पाते है कि उनके बारे में उनके छात्र के बारें में और उनके पेशे के बारे में उनकी भावना पहले से अधिक नकारात्मक हो गई है। ये शिक्षक संवेगिक शोषण तथा थकान, अपने छात्रो के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति और अपने उपलब्धियों के खोने के प्रति हमेशा संदिग्ध होते हैं मनोवैज्ञानिक पद में इन्हें निष्प्रभ शिक्षक कहा जाता है।

डॉ० नौशाद ने अपने अध्ययन में मैश्लेक द्वारा चिन्हित तीन आयामों को ही ध्यान में रखा तथा भारतीय परिस्थितियों में MBI को ही परीक्षण के लिए प्रशासित किया। जिसके निष्कर्ष में उन्होंने कहा है कि संक्षेप में निष्प्रभता एक गम्भीर शैक्षिक मुद्दा है जो इस क्षेत्र में अनुसन्धान के व्यापक द्वार खोलता है।

त्रिपाठी लोकेश ने (2011) में एक शोध किया इनकी शोध समस्या "वाराणसी शहर के सरकारी जूनियर हाईस्कूल विद्यालयों के आध्यापकों की निष्प्रभता का तुलनात्मक अध्ययन"

इनके शोध का उद्देश्य था निष्प्रभता की मात्रा का अध्ययन करना।

अपने शोध के आधर पर इन्होंने जो निष्कर्ष दिये वह इस प्रकार है कि वाराणसी शहर के जूनियर हाईस्कूल विद्यालयों के शिक्षकों की नि में लिंग पूरुष/महिला के आधार पर कोई सार्थक अन्नार नहीं पाता जाता है।

रविंद्र नर्मदा शंकर शुक्ला ने (2011) में एक शोध किया इनकी शोध समस्या "कार्य संतुष्टि आयु लिंग और अनुभव के संदर्भ में शिक्षकों में बर्नआउट सिंड्रोम का एक अध्ययन"

अपने शोध के आधर पर इन्होंने जो निष्कर्ष दिये वह इस प्रकार है कि बर्नआउट का कार्य संतुष्टि के साथ नकारात्मक एवं महत्वपूर्ण संबंध है। निष्कर्ता और उम्र के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है

प्रशांत कुमार पांडे ने (2012) में एक शोध किया इनकी सोच समस्या "निजी एवं सरकारी स्कूल के शिक्षकों के बीच शिक्षकों की थकान नौकरी से संतुष्टि और नौकरी में भागीदारी का तुलनात्मक अध्ययन"

निष्कर्ष में पाया कि बर्नआउट युक्त शिक्षकों का मानसिक थकान एवं उनके व्यावसायिक जीवन पर प्रभाव पड़ता है।

विभा त्रिपाठी ने (2013) में एक शोध किया इनकी शोध समस्या " शिक्षक प्रशिक्षकों की भूमिका तनाव बर्नआउट और मुकाबला शैली का अध्ययन"(A study of role stress burnout and copying style of teacher educators)

अपने शोध के आधार पर इन्होंने निष्कर्ष दिया कि बर्नआउट के दौरान 60% शिक्षक-प्रशिक्षकों ने मुकाबला करने की रक्षात्मक शैली को चुना, जो मुकाबला करने की अंतरपरक शैली के विपरीत है।

यज़्दी, मोतालेबज़ादेह और अशरफ (2014) इनकी शोध समस्या " अंग्रेजी प्रशिक्षकों की थकान और आत्म-प्रभावकारिता के बीच संबंध की जांच" की। परिणाम में पाया की

व्यक्तियों की आत्म-प्रभावकारिता का उनके बर्नआउट के साथ विपरीत संबंध है। इसी तरह, शिक्षकों के बर्नआउट के बारे में समीक्षाओं और उनकी वर्षों की रिपोर्टों के बीच एक बड़ा संबंध स्थापित किया गया है।

साहनी और देसवाल ने (2015) में हरियाणा में शिक्षक प्रशिक्षकों की बर्नआउट डिग्री की जांच की और संभावित कारकों का निर्णय लिया जो इस घटना से जुड़े हो सकते हैं। यह निर्धारित किया गया कि "योग्यता, प्रशिक्षण के वर्षों का अनुभव, शैक्षिक नाम, संगठनात्मक माहौल, व्यावसायिक तनाव, मनोवैज्ञानिक कल्याण, आत्म-मूल्य और व्यक्तित्व कुछ शिक्षक शिक्षकों के थकावट के बड़े संकेत थे, जबकि लिंग और शिक्षण की स्थिति अलग थी।" अब बर्नआउट सिंड्रोम के साथ व्यापक रूप से जुड़ा नहीं रहा।"

डागर और माथुर ने (2016) में अपने लिंग और क्षेत्र के संबंध में हरियाणा के स्कूल शिक्षकों के बीच तनाव की सीमा की जांच की।निष्कर्षों में पाया गया कि पुरुष और महिला स्कूल शिक्षकों की स्थिति में काफी उतार-चढ़ाव होता हैबर्नआउट स्तर जबकि बर्नआउट में कोई बड़ा अंतर निर्धारित नहीं हुआग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षकों के प्रशिक्षण का स्तर।

रश्मि ने (2018) में एक शोध किया इनकी शोध समस्या "उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में आत्म-प्रभावकारिता और व्यावसायिक तनाव के संबंध में निष्प्रभता (burnout among senior secondary school teachers in relation to self efficacy and occupational stress)

वर्तमान अध्ययन में यह पाया कि पुरुष और महिला उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के बीच भावनात्मक थकावट आउट के आयाम में महत्वपूर्ण अंतर है या पाया गया कि पूर्व शिक्षकों में उनके समक्ष महिला शिक्षकों की तुलना में भावनात्मक रूप से थकावट की भावनाएं अधिक थी।

वसंत कुमार ने (2020) में शोध किया इनकी शोध समस्या "धर्मपुरी जिले में कॉलेज शिक्षकों के बीच तनाव और नौकरी की जलन पर एक अध्ययन" परिणाम में पाया किं शिक्षकों के तनाव और थकान का उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव को इंगित करना था। यह अध्ययन उच्च शिक्षा में शिक्षण की प्रभावशीलता और गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करता है और संकाय सदस्यों के संतुष्टि स्तर

में भी सुधार करता है। संकाय सदस्य संस्थान और राष्ट्र की रीढ़ हैं क्योंकि वे अनुसंधान गतिविधियों में सुधार करने वाले और उच्च अध्ययन को अगले स्तर तक ले जाने वाले एकमात्र व्यक्ति हैं। हमारे देश में उच्च अध्ययन में सुधार के लिए सरकारी और निजी संस्थानों को संकाय सदस्यों को समर्थन देना चाहिए।

शीर्षक: "सेवारत माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की थकान पर किसी कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन"

शोधकर्ता :रावत, सारिका चन्द्रशेखर ने (2021) में सेवारत माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की थकान पर किसी कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन" इन्होंने अपने शोध में पाया-शोधकर्ता ने लिंग और जिस स्कूल में वे काम कर रहे हैं उसके अनुसार नमूना समूहों की ताकत और कमजोरियों का अवलोकन किया। 'एलिक्सिर ऑफ लाइफ' कार्यक्रम पहले से ही डिजाइन किया गया था, इसलिए इसमें देखा गया आवश्यक जोड़ और बदलाव अव्यावहारिक था। आगे के सुझाव इन अनुभवों पर आधारित हैं जो बर्नआउट को कम करने में अधिक सफलता प्रदान करेंगे और शिक्षक समुदाय को बर्नआउट की समस्या से उबरने में मदद करेंगे।

भारत के बाहर हुए शोध एवं साहित्य का सर्वेक्षण-

विदेशी सम्बन्धित साहित्य के अन्तर्गत वर्नथ (1976) द्वारा सलाहकार परामर्शदाताओं की निष्प्रभता पर किया गया अध्ययन ।

शुबीन (1978) के द्वारा परिचारिकाओं की निष्प्रभता पर किया गया अध्ययन ।

ग्लाइकेन और काट्ज (1979) द्वारा सामाजिक कार्यकर्ताओं पर किया गया निष्प्रभता सम्बन्धित शोध ।

मैश्लेक और जेक्सन (1979) द्वारा पुलिस अधिकारियों पर अनुशासित निष्प्रभता सम्बन्धित अध्ययनों पर विशेष दृष्टि रही है।

वेनिंग (1983) द्वारा स्वास्थ्य प्रशासको पर किया गया निष्प्रभता सम्बन्धित विशेष दृष्टि रही।

1974 मे प्रुडेनबर्जर ने व्यक्ति विशेष के कार्य सम्बन्धित परिणामों के विस्तृत अप्रभावशीलता तथा लम्बे कार्यगत तनावों को परिभाषित करने के लिए निष्प्रभता (Burnout) राष्ट्र का प्रयोग किया। तब से संयोगवश तनाव और निष्प्रभता पर शोधों की संख्या बढ़ी है। जिसमें विशेष बल मानव सेवा क्षेत्र (Human Services Sector) जिसमें समाज सेवा नर्स, अध्यापक, वकील, चिकित्सक पुलिस आदि सम्मिलित हैं पर दिया गया है। इन व्य poवसायों की सामान्य विशेषता यह है कि वे सभी उच्च भावात्मक कार्य प्रकृति के. है।

ओटो (1986 otto) ने यह दिखाया की लगभग एक तिहाई आस्ट्रेलियन शिक्षक उच्च अथवा अति उच्च तनाव का प्रतिवेदन करते हैं। जब शिक्षक एक निश्चित समय तक उच्चस्तरीय तनाव से संचालित होता है तब उसमें अपने छात्रों के प्रति सद्भावना किं कमी, छात्रों के प्रति धैर्य का अभाव, अपने पाठ से तैयारी के प्रति असफलता तथा अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति समर्पण की कमी के रूप में निष्प्रभता के लक्षण प्रकट होने लगते है।

मैश्लेक एवं जैक्सन (1981) एण्डरसन और इवानिक्च्की (1984), बायर्न (1991-94), मलिक, मूलर और मेंक (1991) के अनुसार तनाव व आक्रोश को परिभाषित करने के पूर्व प्रयास अध्यापक के व्यक्तिगत प्रकृति एवं अध्यापक पर आक्षेप करते है।

यह मत निष्प्रभता के अपेक्षाकृत अधिक सामाजिक मत द्वारा दबा दिया गया जो सिद्ध करता है कि दोनों पृष्ठभूमि व्यक्ति के व्यक्तिगत चर एवं स्कूल की विशेषताएँ शिक्षक के निष्प्रभता में सहायता करती हैं फिर थी अधिकतर निष्प्रभता सम्बन्धित अध्ययन पृष्ठभूमि चरों की खोज पर बड़ा प्रकाश डालते है यथा वैवाहिक प्रस्थिति, उम्र, शिक्षण की अवधि तथा लिंग आदि तथ्यों में विद्यालय और कक्षा का विमीय मनोवैज्ञानिक वातावरण जो अनुभाविक अध्ययन में सम्मिलित है, कभी-कभी शिक्षक निष्प्रभता के पूर्वगामी कारक की भाँति कार्य करता है।

बैंग्रोवा हैं कि जब है। (1994) माध्यमिक के अनुसार आस्ट्रेलियन और अन्य शोधकर्ता यह दर्शा चुके स्कूलों के शिक्षक तब उच्च स्तरीय तनाव का अनुभव करते हैं उनकी तुलना अन्य सफेद पेश (White collar workers) सेवीयों से होती है ।
अध्यापक के तनाव पर छात्रों के अनुचित व्यवहार के प्रभाव पर हर्ट, विटिंग और अन्य (1995) ने निष्कर्ष दिया कि छात्रों के अनुचित व्यवहार को कम करने पर शिक्षक के तनाव का काम होना एक छोटी मात्रा में होता है।

इसके विपरीत बायल बर्ग फुल्जन और बैगलिओनी (1995) ने बतायां कि दबाव और छात्रों का अनुचित व्यवहार शिक्षक के तनाव के लिए मुख्य रूप से गणनीय चर हैं। हर्ट ने अन्ततः यह जोड़ा कि एक एकल स्व प्रतिवेदन के साथ छात्रों का अनुचित व्यवहार पद उस समय के अंकन का साधन हैं, जो शिक्षक ने छात्रों क अनुचित व्यवहार से अन्तक्रिया में खर्च किया है। यह बहस किया जा सकता है कि छात्र के बुरे व्यवहार के विषय में ऐसे सरल सहज अवधारणा के उन जटिल कुव्यवहारों के बारे में कोई मार्ग प्रशस्त नहीं करता है जो समय के अनुकूल नहीं होते है और शिक्षक उनका सामना करते हैं ।

डॉ येल्टेकिन डेमिरल व नूरन गुलेर (2005)- समस्याएं तुर्की में हाई स्कूल शिक्षकों के बीच तनाव
निष्कर्ष: शोधकर्ता ने देखा कि लिंग के अनुसार भावनात्मक थकावट और अप नैनो के प्रति रोपण स्कोर के बीच कोई सांख्यिकी महत्वपूर्ण अंतर नहीं था।
पुरुष शिक्षकों के समूह में भावनात्मक थकावट और प्रतिरूप के बीच एक सांख्यिकी रूप से महत्वपूर्ण सकारात्मक से संबंध था विकसित देशों के शिक्षकों की तुलना में तुर्की के शिक्षक बर्नआउट से कम पीड़ित है।

साहित्य सर्वेक्षण के निष्कर्ष-

बार्यन द्वारा 1994 में क्वीसलैण्ड आस्ट्रेलिया के निजी विद्यालयों के शिक्षकों पर किए गए प्रयोग पिटग्रय और वुल्फ द्वारा उत्तरी अमेरिका में शिक्षकों की निष्प्रभता जाँचने सम्बन्धी अध्ययन मैश्लेक का प्रयोग आदि के अवलोकन के पश्चात तथा

डॉ० नौशाद ने अपने अनुसन्धान के परिणाम में इस बात पर विशेष बल दिया था कि निष्प्रभता एक गम्भीर शैक्षिक मुद्दा है। जो इस क्षेत्र में अनुसन्धान के व्यापक द्वार खोलता है। साथ ही निष्प्रभता पर हुए अनेक शोध माध्यमिक स्तर पर देखते है। चाहे वह शिक्षक के हो या छात्र के हो। अतः शोधकर्ती में स्थानीय स्तर पर इस प्रकार के शोध समस्या के चयन सम्बन्धी उत्कण्ठा के फलस्वरूप ही माध्यमिक विद्यालयों के लिए इस विषय का चयन कर सकी।

डिमिरल वन गुलेल ने अपनी समस्या में यह निष्कर्ष पाया कि पुरुष शिक्षकों के समूह में भावनात्मक थकावट और प्रतिरूप के बीच एक सांख्यिकी रूप से महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध था विकसित देशों के शिक्षकों की तुलना में तुर्की के शिक्षक बर्नआउट से कम पीड़ित थे।जैसा कि साक्ष्य से पता चलता है, पिछले कुछ वर्षों में कुछ चरणों में किए गए अध्ययन ने आत्म-प्रभावकारिता और संगठनात्मक दबाव की तुलना में बर्नआउट की समस्या में योगदान दिया है। दूसरों के अलावा जिन लोगों ने अध्ययन किया है, वे कई चरों पर प्रकाश डालते हैं, जो प्रशिक्षकों के बर्नआउट के आसपास की परीक्षा की पृष्ठभूमि के कारण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण हैं। अध्ययनों के मूल्यांकन से निश्चित रूप से पता चलता है कि प्रशिक्षकों की थकान आत्म-प्रभावकारिता, व्यावसायिक तनाव, लिंग और स्कूल की प्रकृति आदि से सावधानीपूर्वक जुड़ी हुई प्रतीत होती है। संक्षिप्त मूल्यांकन लिंग और स्कूल की प्रकृति के सहसंबद्ध के रूप में प्रशिक्षकों की थकान, आत्म-प्रभावकारिता और संगठनात्मक दबाव में योगदान देने वाली समस्याओं की सूची प्रदान करता है। प्रचलित धारणाओं के परिणामस्वरूप, वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में यह पहचानने के लिए एक चयनित जागरूकता है कि कैसे आत्म-प्रभावकारिता, संगठनात्मक माहौल, लिंग और स्कूल की प्रकृति प्रशिक्षकों की कमी में योगदान दे सकती है। एक बहुआयामी समस्या होने के कारण, यह आगे के शोध के लिए एक प्रश्न भी बन सकता है। जितना गहराई से इसका अध्ययन किया जाता है, यह उतना ही अधिक स्पष्ट हो सकता है, भविष्य में शिक्षकों के बर्नआउट में योगदान देने के लिए अधिक से अधिक अज्ञात स्थान प्राप्त करने की संभावना है

Description Broad Area

प्रस्तावित शोध की आवश्यकता एवं महत्व (Importance and needs of research)-

शिक्षा व्यवस्था में विकास एवं सुधारों की आवश्यकता अनुभव की गई है, शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास का सतत माध्यम है। इस सम्पूर्ण शैक्षिक श्रृंखला में शिक्षक की महती भूमिका होती हैं समाज की तीव्रगति प्रदान करना या शिक्षा की नई योजना क्रियान्वयन का सूत्रधारक गुरु ही होता है।

जो शिक्षक अपने छात्रों का भविष्य संवारते हैं और देश का उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित करते हैं, उन्हें खुशी से काम करने की जरूरत है। यदि उनके बर्नआउट का सकारात्मक और सावधानी से इलाज किया जाता है, तो इससे कक्षा में उनके प्रदर्शन में सीधे सुधार होगा। इसके अलावा, सफलता का प्रवाह शिक्षा में छात्रों की सफलता की ओर प्रवाहित किया जाएगा। यदि इस बर्नआउट पर समय पर ध्यान नहीं दिया गया और ठीक नहीं किया गया, तो यह शिक्षक के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है और बदले में, छात्रों की उपलब्धियों को प्रभावित कर सकता है। अगर हालात बद से बदतर होते गए तो इसका सीधा असर शिक्षा की गुणवत्ता पर पड़ेगा।

किन्तु वर्तमान युग विज्ञान एवं तकनीकी का है चाहे वह गुरु हो या शिष्य सब आगे बढ़ना चाहते है गला काट प्रतियोगिता एक-दूसरे से आगे निकलने का जुनून इन सब कारणों से भी शिक्षकों के स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ रहा है जिसके परिणामस्वरूप अध्यापकों में अत्यधिक मानसिक तनाव जिसके कारण शिक्षण व्यवस्था प्रभावित होती है।

यह शोध वर्तमान समय में अनुदेशन के नवीन आविष्कृत प्रतिधियों, तकनीकों के बढ़ते संजाल के बावजूद भी कक्षा शिक्षण के गिरते स्तर तथा कक्षा शिक्षकों में अपने पेशे के प्रति

निष्ठा में कमी के कारणों का पता लगाने तथा निष्प्रभता से समझने तथा पहचाने का प्रयत्न करती है, साथ ही साथ आगे होने भावी शोध कार्यों के लिए भी महत्वपूर्ण साधन के रूप में प्रयोग हो सकेगी।

अतः आवश्यकता उस नींव को ठीक करने कि है जिस पर इमारत खड़ी होनी चाहिए यद्रि निष्प्रभता के कारण शिक्षण व्यवस्था प्रभावित होगी तो विद्यार्थियों का भविष्य भी प्रभावित होगा तथा इसको दूर करने के बारें में सोचना एवं समाधान करने का प्रयास करना, क्योंकि शिक्षक का शिक्षण कार्य, मूल्य अतिवृत्ति योग्यता आदि का देश के भावी नागरिकों के निर्माण में अभूतपूर्व योगदान है। शिक्षकों की इस समस्या को देखते हुए ही " माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की निष्प्रयता(Burnout) एवं उससे सम्बन्धित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।"

प्रस्तावित शोध का औचित्य (Research rationale)-

प्रस्तुत शोध प्रस्ताव शिक्षकों की निष्प्रभता या (Burnout) के कारकों से सम्बन्धित है।शिक्षा जगत में शिक्षक को बने रहने के लिए बौद्धिक शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, तथा नैतिक होना बहुत जरूरी है क्योंकि शिक्षण कार्य करने के लिए मन व मस्तिष्क का स्वस्थ होना जरूरी है, चाहे वह सरकारी अध्यापक हो या गैर-सरकारी दोनों के लिए अपने शिक्षण कार्यो के प्रति जिम्मेदार, गम्भीर, धैर्यशील, एवं नैतिक होना चाहिए साथ ही साथ कल के आने वाली पीढ़ी के प्रति भावनात्मक रूप से जुड़ाव होने चाहिए।

शिक्षकों को अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि वर्तमान समय में अत्याधिक कार्य

निर्माण में अभूतपूर्व योगदान है।

अतः उपरोक्त समस्याओं के आधार पर शोधार्थिनी ने प्रस्तावित शोध में माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की निष्प्रभता एवं उससे संबंधित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन को चुना है।

प्रस्तावित शोध प्रश्न (Research Questions) -

- वर्तमान में कानपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं में निष्प्रभता की वस्तु -स्थिति क्या है ?
- कानपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं में निष्प्रभता के कारक कौन-कौन है?

प्रस्तावित शोध समस्या (Research problem) -

उक्त शोध प्रश्नों के समाधान प्राप्ति की दृष्टि से प्रस्तावित शोध का कथन निम्नानुसार प्रस्तावित है - **"माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की निष्प्रभता एवं उससे संबंधित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"**

Objectives of the Study-(अध्ययन के उद्देश्य)

प्रस्तावित शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के निष्प्रभता के स्तर का अध्ययन ।

2- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की निष्प्रभता के स्तर पर जेंडर के प्रभाव का अध्ययन ।

3- माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के निष्प्रभता स्तर पर विद्यालयों की वित्तीय पोषण की प्रकृति के प्रभाव का अध्ययन ।

4-माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की निष्प्रभता से संबंधित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन ।

प्रस्तावित शोध अध्ययन की परिकल्पना (Hypothesis of Research)-

प्रस्तावित शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं उपरोक्त उद्देश्यों एवं संबंधित साहित्य सर्वेक्षणों के आधार पर प्रस्तावित शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं निम्नवत है-

1- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की निष्प्रभता का स्तर औसत से उच्च होगा।

2- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के निष्प्रभता स्तर पर जेंडर के प्रभाव में सार्थक अंतर होगा।

3- वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के निष्प्रभता के स्तर में सार्थक अंतर होगा।

4- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के निष्प्रभता स्तर को प्रभावित करने वाले

विभिन्न कारक उत्तरदायी होंगे।

<u>प्रस्तावित शोध अध्ययन की परिसीमाएं (Delimitations of the Study)-</u>

प्रस्तावित शोध निम्नानुसार सीमांकित होगा-

प्रस्तावित शोध उत्तर प्रदेश के कानपुर नगर में स्थित माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित होगा।

अध्ययन में सम्मिलित किए जाने माध्यमिक विद्यालयों में केवल उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद से संबद्ध माध्यमिक विद्यालयों को ही सम्मिलित किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों के 900 शिक्षकों को सम्मिलित किया जाएजा।

शोध अध्ययन में केवल वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया जाएगा।

<u>प्रस्तावित शोध में प्रयुक्त शब्दों का पारिभाषीकरण (Definition of terms used in the proposed research)-</u>

प्रस्तावित अध्ययन में प्रयुक्त प्रमुख शब्द है, माध्यमिक विद्यालय, कार्यरत शिक्षक, एवं निष्प्रभ्रता है। जो निम्न अनुसार परिभाषित किए जा सकते हैं-

<u>माध्यमिक विद्यालय</u>- माध्यमिक शिक्षा का अर्थ है मध्य की अर्थात प्राथमिक व उच्च

शिक्षा के मध्य की शिक्षा प्रो. हुमायूं कबीर के अनुसार- "माध्यमिक शिक्षा शिक्षा की एक ऐसी कड़ी है जो प्राथमिक व उच्च शिक्षा को दृढ़ता के साथ बनती है"

शैक्षिक संरचना में माध्यमिक शिक्षा एक महत्वपूर्ण चरण है क्योंकि यह उच्च शिक्षा के लिए छात्रों को तैयार करती है कक्षा 9वी और 10वीं माध्यमिक चरण का गठन करते हैं और 11वीं और 12वीं की कक्षा को उच्च माध्यमिक चरण में नामित करते हैं। संरचना की दृष्टि से माध्यमिक विद्यालय जैसे- सरकारी माध्यमिक विद्यालय जो सरकार द्वारा व वित्तीय सहायता,मान्यता प्राप्त विद्यालय सरकारी माध्यमिक विद्यालय होते हैं। स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय जो सरकार द्वारा अथवा अर्धवृत्त् पोषित अथवा निजी व्यक्ति, व्यक्तियों के समूह अथवा ट्रस्ट द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालय होते हैं।

<u>कार्यरत शिक्षक</u>- ऐसे शिक्षक होते हैं जो वर्तमान में शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत हैं और अपनी क्षमताओं और कौशलों का प्रयोग करके छात्रों को पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षा प्रदान करते हैं। ये शिक्षक नौकरियों में सक्रिय होते हैं और नियमित रूप से पाठ्यक्रमों का पालन करते हैं।

शोधार्थिनी ने माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वी एवं 10वीं के अध्यापक/अध्यापिकाओं को प्रस्तावित शोध में शामिल किया जाएगा।

<u>निष्प्रभता</u> (Burnout)- निष्प्रभता एक मनोवैज्ञानिक अवस्था है जिसे मुख्य रूप से एक व्यक्ति द्वारा भावनाओं के रूप में अनुभव किया जाता है जिसे शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल होता है और इसलिए मापना और मात्रा निर्धारित करना अपेक्षाकृत कठिन होता

Research Methodology-

प्रस्तावित शोध विधि (Research method)-

- प्रस्तावित शोध प्रस्ताव में शोधार्थिनी द्वारा 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध जनसंख्या एवं न्यादर्श (Research population and sample)

प्रस्तावित शोध जनसंख्या- उत्तर प्रदेश में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत समस्त अध्यापक एवं अध्यापिकाएं शोध जनसंख्या होगी।

प्रस्तावित शोध न्यादर्श - संपूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करना संभव नहीं होगा इसलिए शोधार्थिनी द्वारा कानपुर नगर जनपद में स्थित उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद से संबद्ध वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत 450 अध्यापकों एवं 450 अध्यापिकाओं को गुच्छ न्यादर्श विधि से चयन कर न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध उपकरण (Research tools)-

- प्रस्तावित शोध मे आंकड़ों के एकत्रीकरण हेतु मानकीकृत परीक्षण का प्रयोग किया जाएगा । किसी उपयुक्त मानकीकृल परीक्षण की अनुपलब्धता पर स्वनिर्मित निष्प्रभता परीक्षण का प्रयोग किया जाएगा।

है। फिर भी, कई शोधकर्ताओं ने बर्नआउट के लिए परिभाषाएँ प्रदान करने का प्रयास किया। पाईस और मारलाच (1978) ने बर्नआउट को 'शारीरिक और भावनात्मक थकावट का एक सिंड्रोम' के रूप में परिभाषित किया है जिसमें नकारात्मक आत्म-अवधारणा का विकास, नकारात्मक कार्य दृष्टिकोण और ग्राहकों के लिए चिंता और भावनाओं का नुकसान शामिल है।

पाइंस, एरोनसन, और कैफ़ी (1981) ने कहा कि बर्नआउट की विशेषता "शारीरिक कमी, असहायता की भावना, भावनात्मक पलायन, और नकारात्मक आत्म- अवधारणा का विकास और काम, जीवन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण है।”

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर प्रस्तावित शोध में निष्प्रभता से तात्पर्य है माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों में शारीरिक कमी, असहयता की भावना,भावनात्मक पलायन और नकारात्मक आत्म अवधारणा का विकास और काम, जीवन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण से है जो शारीरिक और भावनात्मक थकावट का एक सिंड्रोम बन जाता है। जिससे व्यक्तियों में अपने कार्यों एवं दायित्व के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण का विकास होता है।

<u>प्रस्तावित शोध सांख्यिकी (Research statistic)-</u>

- प्रस्तावित शोध में आंकड़ों की प्रकृति के अनुसार टी-परीक्षण एवं कारक विश्लेषण आदि उपयुक्त सांख्यिकीय विधियो का प्रयोग आदि उपयुक्त सांख्यिकीय विधियो का प्रयोग किया जाएगा।

Expected Outcomes of the Research-

प्रस्तावित शोध "माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की निष्प्रभता एवं उससे संबंधित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन" है। शिक्षा जगत में शिक्षक को बने रहने के लिए बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, तथा नैतिक होना बहुत जरूरी है क्योंकि शिक्षण कार्य करने के लिए मन व मस्तिष्क का स्वस्थ होना जरूरी है, चाहे वह सरकारी अध्यापक हो या गैर-सरकारी अध्यापक हो दोनों के लिए अपने शिक्षण कार्यों के प्रति जिम्मेदार गम्भीर धैर्यशील एवं नैतिक होना चाहिए साथ ही साथ कल के आने वाली पीढ़ी के प्रति भावनात्मक रूप से जुड़ाव होने चाहिए।

वर्तमान में अनुदेशन के नवीन आविष्कृत प्रविधियों का तकनीकों के नवीन बढ़ते संचार के उद्देश्य बावजूद भी कक्षा शिक्षण के गिरते स्तर तथा कक्षा शिक्षकों में अपराधिक (दायित्वों के प्रति) एवं अपने कार्यों के प्रति निष्ठा में कमी के कारणों का पता लगाने के साथ ही साथ आगे इस विषय पर होने वाली भावी शोध कार्यों के लिए भी महत्वपूर्ण साधन के रूप में प्रयोग किया जाएगा। शिक्षक व्यवस्थित एवं क्रमिक शिक्षा का प्रदर्शन करता है। शिक्षा की सफलता दर काफी हद तक शिक्षकों पर निर्भर करती है। इसलिए, स्वस्थ मन और शरीर वाला शिक्षक ही कक्षा के अंदर और बाहर बेहतर प्रदर्शन सुनिश्चित करता है। यदि शिक्षक के पास सकारात्मक दृष्टिकोण, नवीन और रचनात्मक विचार, साझा करने की इच्छा, संतुलित दिमाग है, तो वही बात छात्रों में विकसित होगी।

बेहतर शिक्षा और बेहतर देश सुनिश्चित करने में कठिनाइयाँ। छात्रों, अभिभावकों, सह-

सहयोगियों. अधिकारियों और सरकारी निकायों जैसे विभिन्न समूहों के साथ काम करते समय. शिक्षकों को कई मतभेदों का सामना करना पड़ सकता है, जिससे मानसिक और शारीरिक तनाव हो सकता है। अल्पकालिक तनाव या तनाव सहने योग्य होते हैं। हालाँकि, कोई व्यक्ति लंबे समय तक भावनात्मक गड़बड़ी और शारीरिक या मानसिक थकान नहीं झेल सकता। इन सभी असामान्यताओं को बर्नआउट कहा जाता है। ऐलेना डेल डून ने बर्नआउट शब्द की सटीक व्याख्या की है। वह कहती है कि, "आप बर्नआउट को तब तक नहीं समझ सकते जब तक आप पूरी तरह से जल नहीं गए हों, और यह कुछ ऐसा है जिसे आप समझा भी नहीं सकते। यह बस कुछ ऐसा करना है जिसके लिए आपके पास बिल्कुल कोई जुनून नहीं है"।

बर्नआउट, शारीरिक तनाव या मानसिक तनाव के कारण थकावट की स्थिति, भावनात्मक थकावट. प्रतिरूपण और काम से संबंधित व्यक्तिगत उपलब्धि की घटती भावनाओं की विशेषता है। व्यावसायिक बर्नआउट धीरे-धीरे तब शुरू होता है जब छात्रों, अभिभावकों, प्रबंधन और समाज की शिक्षकों से मांगें और अपेक्षाएं पूरी नहीं होती हैं और इसके विपरीत भी। पारस्परिक संबंधों में विफलता भी जलन का कारण बनती है। मैस्लाच और लीटर के अनुसार, "बर्नआउट तब होता है जब संगठन और व्यक्ति के बीच छह कार्य-जीवन के संबंध में वियोग होता है।"

बर्नआउट, कम से कम उन्हें बर्नआउट के स्तर को कम करने में मदद करें।

- प्रस्तावित शोध अध्ययन के आधार पर माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की निष्प्रभता का ज्ञात करना।
- प्रस्तावित शोध द्वारा लिंग के आधार पर यह ज्ञात करना कि पुरुष और महिला में कौन अत्यधिक निष्प्रभता से पीड़ित है यह ज्ञात करना।
- प्रस्तावित शोध द्वारा निष्प्रभता के कारकों का पता लगाना।
- प्रस्तावित शोध द्वारा निष्प्रभता से बचने के उपायों का पता लगाना।
- प्रस्तावित शोध द्वारा शिक्षकों को निष्प्रभता संबंधित समस्याओं का ज्ञान होगा और वह इस समस्या के समाधान का प्रयास कर सकेंगे।
- बर्नआउट को कम करने के लिए काम करने की जरूरत है। शिक्षकों को इससे बाहर आने में मदद करनी चाहिए।
- समस्या का परिचय एवं बर्नआउट के कारकों को संघको समझने में सहायता मिलेगी।
- संज्ञानात्मक अनुभव इससे शिक्षक अनुभवों को साझा करके सहयोग प्राप्त कर सकेंगे।
- सामुदायिक सहयोग शिक्षकों के साथ सामुदायिक सहयोग का माध्यम बनता है।
- सुधारात्मक उपाय एवं उत्पादकता बढ़ाने के उपाय की मदद करेगा।
- विद्यार्थियों के लिए लाभ एवं बेहतर शिक्षा प्रदान करने के लिए यह शोध मदद करेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची (Reference)

1. गुप्ता, एस-पी. एवं (2009) शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
2. पाण्डेय, के० पी० (2007) शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
3. पाण्डेय, के० पी० (2008) शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
4. सिंह, लाल साहब (2008) मापन, मूल्यांकन एवं सांख्यिकी, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
5. सिंह, अरूण कुमार (2010) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध की विधियाँ, मोतीलाल बनारसी दास एण्ड सन्स, नई दिल्ली।
6. चौधरी, रेनू (2001) टीचर बर्नआउट इन रिलेशन टू अकुपेशनल स्ट्रेस, मेन्टल हेल्थ प्राब्लम्स एण्ड सोसियो इकोनामिक स्टेट्स-ए फैक्टर एनालिटीकल स्टडी, कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी। श्रोत: www.ijepr.org(5 December 2022)
7. नौशाद (2008) फ्रॉम टीचर बर्नआउट टू स्टूडेण्ट बर्नआउट, फारूक ट्रेनिंग कॉलेज, केरला। श्रोत: https://files.eric.ed.gov(9 December 2022)
8. त्रिवेदी, तृप्ता (2005) ए स्टडी ऑफ परसनाल्टी एण्ड प्रोफेसनल एटीट्यूट ऑफ बर्नआउट टीचर्स, लखनऊ यूनिवर्सिटी। श्रोत: https://shodhganga.inflibnet.ac.in (21 दिसंबर 2022)
9. त्रिवेदी, तृप्ता (2006) बर्नआउट इन इंडियन टीचर्स, एसिया पैसिफिक एण्ड अनिल शुक्ला, एजुकेशन रिव्यू, वाल्यूम 9.3। श्रोत: https://www.tandfonline.com (10 January 2023)
10. हटवाल, तृप्ता (2011) मैनुअल फॉर बर्नआउट स्केल, इंस्टीट्यूट ऑफ साइकोलॉजिकल टेस्टिंग, वाराणसी। श्रोत: https://shodhganga.inflibnet.ac.in (11 January 2023)
11. Akbaba, S. (2014). *A Comparison of the Burnout Levels of Teachers with Different Occupational Satisfaction Sources, Educational Sciences: Theory & Practice*, 14(4), 1253-1261. Retrieved from https://files.eric.ed.gov (10 may 2023)

12. Andre, H. Brouwers and Welko Tomic (2000). *A longitudinal study of teacher burnout and perceived self-efficacy in classroom management*, Teaching and Teacher Education, 16, 239-253. Retrieved from https://www.sciencedirect.com (15 myi 2023)
13. Bandhu, Tarlok (2006). A study of Burnout among college teachers of Punjab in relation to Organizational Role Stress and Institutional Climate. Ph.D thesis in Education, Himachal Pradesh University, Shimla. Retrieved from https://ncert.nic.in(6 June 2023)
14. Bauer, J., et al. (2006). Correlation between burnout syndrome and psychological and Psychosomatic symptoms among teachers. International Archive of Occupational Environmental Health, 79, 199-204. Retrieved from https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov(20 June 2023)
15. Chand, P. and Monga, O.P. (2007). Correlates of job stress and burnout. J.Com. Gui. Res. 24(3). 243-252
16. B. Vasavi B. Sudhir (2018) Sources of Role Stress among Employees in Indian Service Sector. *The International Journal of Indian Psychology Volume 6, Issue 2* April - June, 2018. Retrieved from http://www.ijip.in(1 July 20)
17. Dr. Piar Chand and Dr. Nisha Kumar (2013) A Study of the Correlates of Job Stress and Burnout Among Technical Teachers. PARIPEX- INDIAN JOURNAL OF RESEARCH vol 3 issue 4 may 2013 Retrieved from www.worldwidejournals.com
18. Dworkin, A.G. (1987). Teacher burnout in public schools: Structural causes and consequences for children. Albany: NY. State University of New York Press. Retrieved from http://www.vtaide.com(1 July 2023)
19. Dustin DuBose (2020). Burnout in college resident assistants: indicators of emotional exhaustion, depersonalization, and personal accomplishment .Liberty University, Lynchburg, VA. Retrieved from https://digitalcommons.liberty.edu(6 july 2023)
20. Gebrekirstos, H.A. (2015). Occupational stress among secondary school teachers and their coping strategies. International Journal of Academic Research in Education and Review, 3(6), 143-157. Retrieved from https://www.academia.edu(3 August 2013)
21. Howard, S., and Johnson, B. (2004). Resilient teachers resisting stress and burnout Journal of Social Psychology of Education,7,399-420. Retrieved from https://www.scirp.org(12 August 2013)
22. Rathi, N. and Rastogi, R. (2008). Effect of Emotional Intelligence on Occupational Self Efficacy, The ICFAI Journal of Organizational Behavior, 7(2), 46-56, Retrieved from https://www.researchgate.net (5 September 2023)

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language	Hindi

Submission Information

Author Name	Anjana Yadav
Title	Madhyamik Vidyalayon men Karyarat Shikshakon ki Nishprabhata evam Usase Sambandhit Karakon ka Vishleshanatmak Adhyayan
Paper/Submission ID	3609004
Submitted by	pkpuprtou@rediffmail.com
Submission Date	2025-05-13 15:47:26
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity	**0%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

27/05/25